अध्याय 19

परमेश्वर और उसके लोगों के बीच वाचा

परमेश्वर और इस्राएल के मध्य वाचा के उत्पन्न होने का रिकॉर्ड निर्गमन 19 में रखा गया है। यह वाचा इसलिए थी कि उस समय से परमेश्वर अपने लोगों के साथ किस प्रकार व्यवहार करेगा उन बातों का प्रबन्ध किया जा सके।

मिस्र से निकलने के तीन महीने बीतने के बाद इस्राएली लोग सीनै के जंगल में आए और उन्होंने सीनै पर्वत के आगे अपनी छावनी डाली (19:1, 2)। तब मूसा पर्वत पर चढ़ गया। इस्राएलियों के लिए जो कुछ परमेश्वर ने किया उसे वहाँ पर परमेश्वर ने फ़िर से दोहराया और उनके सम्मुख यह प्रस्ताव रखा कि अगर वे उसकी आज्ञा का पालन करेंगे तो वह उन्हें अपने विशेष लोग बना लेगा (19:3-6)। मूसा ने परमेश्वर का प्रस्ताव लोगों के सम्मुख दोहरा दिया और वे परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए तैयार हो गए (19:7, 8)।

परमेश्वर ने कहा कि वह व्यक्तिगत रूप से लोगों से बात करेगा इस कारण मूसा ने इस्राएलियों से कहा कि परमेश्वर से मिलने के लिए वे स्वयं को शुद्ध करें। फ़िर भी किसी को भी पवित्र पर्वत के निकट नहीं आना था (19:9-15)। तीसरे दिन परमेश्वर ने लोगों पर अपनी उपस्थिति प्रकट की (19:16-19)। तब उसने मूसा को निर्देश दिया कि वह हारून को अपने साथ लेकर पर्वत की चोटी पर आए (19:20-25)।

परमेश्वर की ओर से इस्राएल के लिए बुलाहट (19:1-9)

[1]इस्राएलियों को मिस्र देश से निकले हुए जिस दिन तीन महीने बीते, उसी दिन वे सीनै के जंगल में आए। [2]और जब वे रपीदीम से कूच करके सीनै के जंगल में आए, तब उन्होंने जंगल में डेरे खड़े किए; और वहीं पर्वत के आगे इस्राएलियों ने छावनी डाली। [3]तब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया, और यहोवा ने पर्वत पर से उसको पुकारकर कहा, "याकूब के घराने से ऐसा कह, और इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना: [4]'तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ। [5]इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में

से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। 6और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।' जो बातें तुझे इस्राएलियों से कहनी हैं वे ये ही हैं।" 7तब मूसा ने आकर लोगों के पुरनियों को बुलवाया, और ये सब बातें, जिनके कहने की आज्ञा यहोवा ने उसे दी थी, उनको समझा दीं। 8और सब लोग मिलकर बोल उठे, "जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम नित करेंगे।" लोगों की यह बातें मूसा ने यहोवा को सुनाईं। 9तब यहोवा ने मूसा से कहा, "सुन, मैं बादल के अंधियारे में होकर तेरे पास आता हूँ, इसलिये कि जब मैं तुझ से बातें करूँ तब वे लोग सुनें, और सदा तुझ पर विश्वास करें।" और मूसा ने यहोवा से लोगों की बातों का वर्णन किया।

आयतें 1, 2. इस्राएलियों को **मिस्र** देश से निकले हुए **जिस दिन तीन महीने बीते**, उसी दिन वे **सीनै के जंगल** में आए।[1] जॉन जे. डेविस ने यह नोट किया कि "यहूदी परम्परा इस घटना को यहूदी वर्ष के तीसरे महीने के प्रथम दिन में रखती है।" साथ ही उसने कहा कि "इसी प्रकार की एक अन्य परम्परा फ़सह के बाद पचासवें दिन व्यवस्था दिए जाने को स्थापित करती है परन्तु इसे ऐतिहासिक मानने के लिए यह एक बहुत ही प्राचीन उत्पत्ति लगती है।"[2]

सीनै के प्रकाशन में शामिल दिनों की जो गणना अंबरटो कस्सुटो ने की वह निम्नलिखित है:

19:1 "जिस दिन" महीने का पहला दिन था।

19:3 उस महीने के दूसरे दिन जब "मूसा परमेश्वर के पास गया।" उसी दिन, मूसा, परमेश्वर का सन्देश लोगों के लिए लाया।

19:8 उस महीने के तीसरे दिन "लोगों की यह बातें मूसा ने यहोवा को सुनाईं।" बदले में परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिए जो 19:9 में देखे जा सकते हैं; तब मूसा ने वे निर्देश लोगों तक पहुँचा दिए।

19:9 "लोगों की यह बातें मूसा ने यहोवा को सुनाईं," जब उसने अगले दिन अर्थात उस महीने के चौथे दिन, परमेश्वर के प्रस्ताव के बारे में लोगों की सहमति के बारे में परमेश्वर को बताया।

19:10 "आज और कल," उस महीने के चौथे और पाँचवें दिन की ओर संकेत करता है।

19:11 "तीसरे दिन," इसी क्रम में उस महीने का छठवाँ दिन था।[3]

कस्सुटो अपनी गणना की समाप्ति यह कहते हुए करता है,

> परिणामस्वरूप प्रकाशन का दिन उस महीने का छठवाँ दिन था जो इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के बाद सातवें सप्ताह के अन्त को बताता है। बाद की परम्परा, जो सीनै पर्वत पर प्रकाशन के दिन को सप्ताहों के पर्व के साथ जोड़ती

है, ऊपरी तौर पर पाठ के वास्तविक अर्थ के साथ सहमति रखती है।[4]

पाठ्य यह संकेत देता है कि सीन से पहले इस्राएल का अन्तिम ठहराव **रपीदीम** (17:1, 8) था। यहाँ दिया गया पद स्वयं इस बात को दोहराता है; यह वास्तविकता तीन बार देखने को मिलती है। कुछ लोग विभिन्न स्रोतों के प्रयोग के प्रति इस अद्‌भुत घटना को श्रेय प्रदान करते हैं। फ़िर भी यह कोई अनावश्यक दोहराव नहीं है; प्रत्येक वाक्यांश बताई जाने वाली घटना में एक जुड़ाव की सूचना देते हुए बना रहता है। तीन ऐसे ही वाक्यांश हैं जिनका वर्णन किया जा सकता है, वे निम्नलिखित हैं:

वे कहाँ पर थे (सामान्य क्षेत्र):
19:1: **... वे सीनै के जंगल में आ गए थे।**

उन्होंने क्या किया (उन्होंने वहाँ डेरे खड़े किए):
19:2: **... वे सीनै के जंगल में आए, तब उन्होंने जंगल में डेरे खड़े किए**

उन्होंने कहाँ पर डेरे खड़े किए (विशेष स्थान):
19:2: **... वहीं पर्वत के आगे इस्राएलियों ने छावनी डाली।**

यहाँ पर दोहराव रखने के पीछे यह विचार रहा होगा कि पर्वत - सीनै पर्वत, अर्थात "परमेश्वर के पर्वत," के पास इस्राएल के आगमन पर बल दिया जा सके, जिसके पास लाने के लिए परमेश्वर ने लोगों से वायदा किया था।[5] मिस्र से निकलने के बाद तीसरे महीने में, इस्राएलियों ने सीनै पर्वत के आगे छावनी डाली।

आयत 3. इस्राएलियों ने सीनै पर्वत के आगे छावनी डाली, तब पहली बार **मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया**। जब तक मूसा **पर्वत पर** रहा, तब वहाँ परमेश्वर ने उससे कहा कि वह इस्राएलियों को अवसर दे कि वे उसके साथ वाचा के सम्बन्ध में प्रवेश करें। **याक़ूब के घराने से ऐसा कह**, और **इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना**, पद में काव्य दोहराव देखा जा सकता है जो एक ही अर्थ को बाँटता है।

आयत 4. परमेश्वर ने इस्राएल के लिए जो कुछ किया उसके बारे में बात करते हुए वह अपने प्रस्ताव का आरम्भ करता है। **मिस्त्रियों** पर महामारियों के द्वारा और उनकी सेना को समुद्र में नष्ट करने के द्वारा वह उन पर जयवन्त हुआ था। वह इस्राएलियों को जंगल से **उकाब पक्षी के पंखों** पर चढ़ाकर सीनै पर्वत के पास अपने निकट ले **आया** था। रूपक "उकाब पक्षी" ऐसा सुझाता है कि परमेश्वर इस्राएलियों को इसी प्रकार ले आया था जैसे माता उकाब अपने बच्चों को उस समय उठाकर चलती है जब वे उड़ना सीखते हैं (देखें व्यव. 32:11)। यह चित्र परमेश्वर की कोमल देख-भाल और इस्राएल की पूर्ण निर्भरता का वर्णन करता है। इस्राएल को अपने निकट पर्वत के पास लाने के द्वारा परमेश्वर ने वह वायदा पूरा किया जैसा उसने पूर्व में किया था (3:12)।

सीनै पर्वत की ओर मूसा की यात्रा[1]

यात्रा 1. परमेश्वर ने एक वाचा का प्रस्ताव रखा (19:3-7)। परमेश्वर ने इस्राएल के साथ एक वाचा बाँधने का प्रस्ताव रखा और मूसा नीचे गया और इस्राएल के लिए परमेश्वर के प्रस्ताव को उसने दोहराया।

यात्रा 2. लोगों ने प्रस्ताव को स्वीकार किया (19:8-15)। मूसा ने इस्राएलियों का उत्तर परमेश्वर तक पहुँचा दिया और एक सन्देश प्राप्त किया कि परमेश्वर उस पर्वत पर उतर आएगा।

यात्रा 3. व्यवस्था प्राप्त करने के लिए परमेश्वर ने लोगों को तैयार किया (19:20-25)। परमेश्वर ने मूसा को चेतावनी देने के लिए कि लोग पास में न आए और यह कहने के लिए कि कुछ अन्य लोगों के साथ आए, ऊपर बुलाया; 19:25 कहती है कि मूसा नीचे गया और लोगों को यह बात बता दी। निर्गमन 20 में परमेश्वर ने मण्डली को पर्वत के पास दस आज्ञाएँ दी। लोगों ने अपने-अपने स्थान से परमेश्वर की वाणी को वहाँ पर सुना। इससे डर कर उन्होंने मूसा से कहा कि परमेश्वर के स्थान पर मूसा ही उनसे बात करे।

यात्रा 4. परमेश्वर ने एक बड़े विवरण के साथ व्यवस्था दी (20:21-23:33)। यह कथन कि मूसा "उस घोर अन्धकार के समीप गया जहाँ परमेश्वर था," पर्वत की ओर मूसा की अगली यात्रा की ओर संकेत करता है। परमेश्वर ने उसे वाचा की पुस्तक में व्यवस्था दी। मूसा ने ये व्यवस्था लोगों को दे दी और उन्हें लिख लिया (24:3, 4)। 24:3 में मूसा नीचे गया; परन्तु नीचे जाने से पहले उसने यह वचन पाया कि उसे फ़िर से ऊपर जाना है और अन्य लोगों को भी अपने साथ ले (24:1, 2)।

यात्रा 5. परमेश्वर इस्राएल के पुरनियों से मिला (24:9-11)। मूसा, पर्वत पर पुरनियों के एक समूह को लेकर गया और परमेश्वर के साथ अपनी वाचा का अंगीकार करने के लिए उन्होंने वहाँ पर खाया पीया।

यात्रा 6. तम्बू के बारे में परमेश्वर ने निर्देश दिए (24:12-31:18)। "व्यवस्था लिखी हुई पत्थर की पटियाएँ और आज्ञाएँ" (24:12) पाने के लिए मूसा ऊपर चढ़ा। उसने तम्बू बनाने के लिए निर्देश भी प्राप्त किए। इस बार वह वहाँ पर चालीस दिन और चालीस रात रहा (24:18)। जब वह इस्राएलियों के डेरे की ओर लौटा तब उसके पास परमेश्वर की उंगली से लिखी हुई आज्ञाओं के साथ पत्थर की दोनों तख्तियाँ दीं (31:18; व्यव. 5:22) - परन्तु उसने लोगों को मूर्तिपूजा में पाया (अध्याय 32)।

यात्रा 7. मूसा ने दूसरी बार व्यवस्था प्राप्त की, जैसा कि परमेश्वर ने वाचा को फ़िर से नया किया (अध्याय 34)। मूसा दो नई तख्तियों के साथ पर्वत पर चढ़ा, उसने परमेश्वर को देखा और दूसरी बार दस आज्ञाएँ प्राप्त की। वह वहाँ पर चालीस दिन और चालीस रात रहा (34:28)।

---

[1]विद्वानों ने 19:9 और 32:31 से अतिरिक्त यात्राओं का अनुमान निकाला है।

वाचा तैयार करने की प्रक्रिया को आरम्भ करने में परमेश्वर ने वाचा के आधार की घोषणा की। इस्राएल की धार्मिकता के कारण वह इस्राएल के साथ वाचा के एक सम्बन्ध में प्रवेश नहीं कर रहा था। वास्तव में, जब से इस्राएल मिस्र से निकल कर आया था, तब से लोगों ने लगातार स्वयं को अविश्वासयोग्य, उनके साथ हुई घटनाओं को भूल जाने वाले और कृतघ्न के रूप में सिद्ध किया। अनुग्रह के द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल का चुनाव किया क्योंकि उसने पूर्वजों से वायदे किए थे और विशेष रूप से उसने अब्राहम से वायदे किए थे। इस्राएल की ओर से, वाचा, परमेश्वर के अनुग्रहकारी कार्यों पर आधारित थी - वह जो परमेश्वर ने इस्राएल के लिए किया था, न कि उस पर जो इस्राएल ने परमेश्वर के लिए किया या करने का वायदा किया था (व्यव. 7:6-8; 9:4-6)।

आयत 5. वाचा के लिए अपने अनुग्रहकारी कार्यों को आधार बताते हुए बात करने के बाद परमेश्वर ने वाचा की शर्तों के बारे में बताया। इस्राएल की ज़िम्मेदारी यह थी कि वे (परमेश्वर) की **माने** और (उसकी) **वाचा का पालन करें** - एक की बात को बताने के ये दो तरीके हैं। इसके बदले में परमेश्वर, संसार के सब लोगों में से इस्राएल को **ही अपना निज धन ठहराने** के द्वारा इस्राएल को आशिष देगा। यह पद प्रमाणित करता है कि इस्राएलियों के बारे में कुछ भी कहा गया हो फ़िर भी पुराना नियम में वे परमेश्वर के विशेष लोग थे।[6] इस्राएल के चुनाव का अधिकार परमेश्वर के पास था क्योंकि **समस्त पृथ्वी** परमेश्वर की है।

"निज धन" (לִי סְגֻלָּה, *ली सेगुल्लाह)* का अनुवाद "मेरे लिए एक असामान्य कोष" (KJV), "मेरे लिए एक विशेष कोष" (NKJV), "मेरे द्वारा एकत्रित कोष" (NRSV; NIV), और "मेरा व्यक्तिगत धन" (NJB) के रूप में किया गया है। यह पद अन्य पाठ्यों में भी देखने को मिलता है जो परमेश्वर के प्रति इस्राएल के सम्बन्ध (व्यव. 7:6; 14:2; 26:18; भजन 135:4) का वर्णन करता है। *सेगुल्लाह* शब्द चाँदी और सोने (1 इतिहास 29:3; सभो. 2:8) के जैसे व्यक्तिगत कोष के साथ जुड़ा हुआ है। वर्तमान सन्दर्भ में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है वह, अन्य सब कुछ से ऊपर एक मूल्यवान धन की ओर संकेत करती है। इस कारण परमेश्वर के "स्वयं के लोग" (CEV) होने का सौभाग्य विशेष आशिषों के बारे में बताता है जैसा कि परमेश्वर देखता है और जो उसके हैं उन्हें वह आशिष देता है।

आयत 6. इस विचार के प्रति परमेश्वर ने इस सच्चाई को जोड़ा कि इस्राएल परमेश्वर की दृष्टि में **याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरेगा**। "**याजकों का राज्य**" (מַמְלֶכֶת כֹּהֲנִים, *मामलेकेथ कोहानिम)* का अनुवाद "याजकीय राज्य" के रूप में किया गया है। वॉल्टर सी. कैसर, जूनियर, ने कहा कि वास्तव में इब्रानी पद के चार उचित अनुवाद है: "राजा, [अर्थात,] याजक लोग," "राज-पदधारी याजकों का समाज," "याजकीय राज्य," और "राजा (और) याजक।"[7]

जेम्स बर्टन कॉफमैन ने बल दिया कि यह पद प्रदर्शित करता है कि "वह यहूदी याजकीय सेवा जो परमेश्वर ने बाद में इस्राएल को दी, वास्तव में परमेश्वर में मन में यह *नहीं* था," परन्तु यह था कि मूल रूप से प्रत्येक विश्वासी याजक के रूप में कार्य करे।[8] फ़िर भी, याजकीय व्यवस्था परमेश्वर की योजना में बाद का विचार

अथवा महत्वहीन विकल्प नहीं रहा होगा। इसके कुछ समय बाद ही आरम्भ की गई याजकीय व्यवस्था "अच्छी चीज़ों के आगमन की छाया थी" (*इब्रानियों* 10:1), जिसमें बाद के दिनों में लोगों को इस योग्य बना दिया जाए कि वे नई वाचा के अन्तर्गत मनुष्य के साथ परमेश्वर के व्यवहार को और भी अधिक अच्छी प्रकार से समझ सकें।

कॉफमैन के विचारों के अन्तर में अधिकतर टीकाकार इस पद पर, लोगों को याजकों के रूप में देखने के स्थान पर सम्पूर्ण राष्ट्र को "याजकों का राज्य," अथवा एक याजकीय राज्य पर बल देते हुए देखते हैं। आर. एलन कोल, ने उदाहरण के लिए, लिखा, "यह इस्राएल का याजकीय स्तर है जिस पर ध्यान दिया गया है।"[9] यह समझ इस बात पर बल देती है कि *इस्राएल को किस प्रकार का राष्ट्र होना चाहिए।* जॉन आई. डर्हम ने कहा कि यह पद "इस बात का वर्णन करता है कि इस्राएल को सदैव किस प्रकार का होना चाहिए: एक ऐसा राज्य जो राजनेताओं की ताकत और उपेक्षा पर निर्भर रहते हुए न चलाया जाए परन्तु याजकों के द्वारा चलाया जाए जिसमें वे यहोवा पर विश्वास पर निर्भर रहें और राज्य करने वाले एक राष्ट्र के स्थान पर एक सेवक राष्ट्र हों।"[10]

दूसरा बल इस बात पर दिया गया कि *उस राष्ट्र को क्या करना चाहिए।* याजकों के राज्य के रूप में लोगों पर ज़िम्मेदारी थी कि वे परमेश्वर के विषय में अपने ज्ञान को अन्य राज्य के लोगों के साथ बाँटें। कैसर इसे और अच्छी प्रकार बताते हैं: "सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए यह कार्य था कि वे पृथ्वी के सब राष्ट्रों के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह के मध्यस्थ लोगों के रूप में काम करें, यहाँ तक कि जैसा अब्राहम से वायदा किया गया था कि उसके द्वारा और उसकी पीढ़ी के द्वारा भूमण्डल के सारे कुल आशीष पाएँगे (उत्पत्ति 12:3)।"[11] डर्हम ने टिप्पणी की कि यह प्रकटीकरण इस्राएल को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करता है जो "सम्पूर्ण संसार में यहोवा परमेश्वर की उपस्थिति, की सेवा के फैलाव के प्रति समर्पित है।"[12]

इस्राएल के लिए यह आवश्यक था कि वह "पवित्र राष्ट्र" बने, अर्थात, एक ऐसा राष्ट्र जो परमेश्वर के विशेष प्रयोग के लिए अन्य राष्ट्रों से अलग किया गया हो। "पवित्र" (קָדוֹשׁ, *कडोश)* को इस प्रकार समझाया जा सकता है कि वह जो अन्दर तक पवित्र (परमेश्वर) हो, साथ ही वह (यहाँ पर, इस्राएल) जो पवित्र बन गया हो। पवित्रता, परमेश्वर की दिव्यता से और साथ ही दिव्य क्रियाकलाप से आती है। "पवित्र" चीज़ें, स्थान और लोग किसी सामान्य अथवा अपवित्र के अन्तर में अलग स्थान में खड़े होते हैं। जैसा कि पवित्रता परमेश्वर से आती है, इसमें भलाई और शुद्धता शामिल हैं। इस्राएल "पवित्र राष्ट्र" बने इसका अर्थ विस्तार से बाद में लैव्यव्यवस्था में विशेष रूप से बताया गया है।

आयतें 7, 8. वाचा को तैयार करने की प्रक्रिया में अगला चरण यह था कि लोग परमेश्वर की शर्तों के साथ सहमत हों। हालांकि इस्राएल, परमेश्वर की वाचा के लोग होने के अधिकारी नहीं थे और इस कारण उनके लिए वाचा की शर्तें नहीं होनी चाहिए थी परन्तु परमेश्वर ने उनके सम्मुख अपना प्रस्ताव रखते हुए अवसर दिया कि वे या तो उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लें या उसे अस्वीकृत कर दें। **मूसा**

ने **पुरनियों** को **लोगों के** प्रतिनिधियों के रूप में बुलाया और **परमेश्वर** की **सब बातें**, उनको समझा दीं। सम्भावित रूप से लोग भी वहाँ पर उपस्थित थे अथवा पुरनियों ने उन्हें ये बातें बता दी जैसा मूसा ने उनसे कहा। इसका परिणाम यह रहा: **और सब लोग मिलकर बोल उठे, "जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम नित करेंगे!"**

यह सहमति, तब वाचा बन गई जो इस्राएल के साथ परमेश्वर के व्यवहार का आधार रही। इसी समय से जब तक इस्राएली लोग "जो कुछ यहोवा ने कहा है," के प्रति अपने समर्पण में सच्चे बने रहे तब तक परमेश्वर ने उन्हें अपने निज लोगों के रूप में आशिष दी। जब वे लोग "जो कुछ यहोवा ने कहा है," ऐसा करने में असफ़ल हुए तब उस समय उनके रक्षक और प्रबन्धक के रूप में परमेश्वर ने अपने वायदे भुला दिए।

बाद में, जब परमेश्वर ने अधिक विस्तार से व्यवस्था को समझाया तब यह स्पष्ट हो गया कि अगर लोग परमेश्वर की आज्ञा को मानने में असफ़ल होते हैं तो वे परमेश्वर से श्रापों का अनुभव करेंगे। फ़िर भी परमेश्वर, इस्राएलियों के साथ अपना सम्बन्ध तोड़ नहीं लेगा जब वे पाप करते हैं। पुराना नियम, निर्गमन 19 से इस इतिहास पर है कि इस्राएल परमेश्वर के प्रति किस प्रकार अपने वायदों को पूरा कर पाया - या, प्रायः अधिक रूप से उन्हें याद रखने में असफ़ल रहा - और इसके बारे में है कि परिणाम के रूप में परमेश्वर ने किस प्रकार उन्हें आशिष दी अथवा श्राप दिया।

वाचा के इस व्यवहार में मूसा ने एक मध्यवर्ती व्यक्ति के रूप में काम किया। इस्राएल के सम्मुख परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में उसने **लोगों को** परमेश्वर की बातें बता दी। तब इस्राएल के प्रतिनिधि के रूप में उसने उनके प्रत्युत्तर **परमेश्वर** तक पहुँचा दिए।

आयत 9. परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह **बादल के अंधियारे** में होकर पर्वत पर उतरेगा जिससे कि जब वह मूसा से बात करे तब **लोग सुनें** और मूसा में **विश्वास करें** (देखें 14:31)। जब **मूसा** पर्वत पर ही था तब परमेश्वर ने उसे आगे के निर्देश दिए जो 19:10-13 में दिए गए हैं।

परमेश्वर के प्रति इस्राएल को पवित्र किया जाना (19:10-15)

[10]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "लोगों के पास जा और उन्हें आज और कल पवित्र करना, और वे अपने वस्त्र धो लें, [11]और वे तीसरे दिन तक तैयार हो जाएँ; क्योंकि तीसरे दिन यहोवा सब लोगों के देखते सीनै पर्वत पर उतर आएगा। [12]और तू लोगों के लिये चारों ओर बाड़ा बाँध देना, और उनसे कहना: 'तुम सचेत रहो कि पर्वत पर न चढ़ो और उसकी सीमा को भी न छुओ; और जो कोई पहाड़ को छूए वह निश्चय मार डाला जाए। [13]उसको कोई हाथ से न छूए; जो छूए उस पर पथराव किया जाए, या उसे तीर से छेदा जाए; चाहे पशु हो चाहे मनुष्य, वह

जीवित न बचे।' जब महाशब्द वाले नरसिंगे का शब्द देर तक सुनाई दे, तब लोग पर्वत के पास आएँ।" 14तब मूसा ने पर्वत पर से उतरकर लोगों के पास आकर उनको पवित्र कराया; और उन्होंने अपने वस्त्र धो लिए। 15और उसने लोगों से कहा, "तीसरे दिन तक तैयार हो जाओ; स्त्री के पास न जाना।"

आयतें 10-13. लोगों के द्वारा वाचा को स्वीकार किए जाने के बाद यह आवश्यक था कि वे सार्वजनिक रूप से अपने अंगीकार की घोषणा करें। यह औपचारिक घोषणा वाचा की विशेष माँगों को बताएगी जिसे इस्राएलियों ने पहले ही मान लिया था। इस प्रकार के औपचारिक अवसर ने इस्राएलियों से यह माँग की कि **परमेश्वर** से मिलने के लिए वे स्वयं को **शुद्ध** करें। जैसा कि परमेश्वर पूर्ण रूप से पवित्र है, इस कारण जब कभी वह मनुष्य से मिलने के लिए झुके तब ऐसे किसी भी अवसर पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक था। इस कारण जब मूसा ने परमेश्वर को उसके प्रस्ताव के प्रति इस्राएल का प्रत्युत्तर सुना दिया तब परमेश्वर ने उसे निर्देश दिए कि व्यवस्था को प्राप्त करने के लिए इस्राएल को किस प्रकार स्वयं को शुद्ध करना होगा।

परमेश्वर ने कहा कि इस्राएलियों की शुद्धि के लिए दो दिन लगेंगे और **तीसरे दिन** वह **लोगों को दिखाई देगा**। शुद्धि की प्रक्रिया के भाग के रूप में उन्हें अपने वस्त्र **धोने** थे। आगे, **लोगों** के लिए यह आवश्यक था कि वे **पर्वत** को पवित्र जानते हुए **छूएँ** नहीं; उन्हें इसके चारों ओर **बाड़ा बाँधना** था और इसके निकट नहीं जाना है। वास्तव में अगर कोई भी मनुष्य अथवा जानवर **पर्वत** को छूएगा वह मार डाला जाएगा। इससे अधिक उसका पाप एक अर्थ में संक्रामक होगा। जैसा कि दोषी व्यक्ति पर्वत को नहीं छू सकता, जो लोग उसे मार डालेंगे वे भी **उसे छू नहीं** सकते। इसके स्थान पर उन्हें उसे पत्थरवाह करने के द्वारा अथवा तीरों से मारना होगा। उन्हें **पर्वत के पास** तब ही आना है जब तीसरे दिन महाशब्द वाले **नरसिंगे** का शब्द सुनाई दे। तब भी उन्हें पर्वत के ऊपर चढ़ने के स्थान पर उसके पास एकत्रित होना है।

आयतें 14, 15. लोगों को ये निर्देश देने के लिए **मूसा पर्वत** से नीचे उतर आया और उन्होंने वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने निर्देश दिए थे। मूसा ने यह संकेत दिया कि परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने के प्रति उनकी तैयारी के रूप में वे लोग किसी भी प्रकार के लैंगिक सम्बन्धों से दूर रहें (**"स्त्री के पास न जाना"**) जब तक कि वे उसकी उपस्थिति से होकर न चलें जाएँ। इस अस्थायी परहेज की आवश्यकता इसलिए नहीं थी कि लैंगिक सम्बन्ध आन्तरिक रूप से पापपूर्ण है परन्तु इसके स्थान पर इसलिए थी क्योंकि वे रीति के अनुसार अशुद्ध थे (देखें लैव्य. 15:18; 1 शमूएल 21:4, 5; 2 शमूएल 11:6-11)।

इस्राएल का परमेश्वर के सम्मुख आना (19:16-25)

16जब तीसरा दिन आया तब भोर होते ही बादल गरजने और बिजली चमकने

लगी, और पर्वत पर काली घटा छा गई, फिर नरसिंगे का बड़ा भारी शब्द हुआ, और छावनी में जितने लोग थे सब काँप उठे। 17तब मूसा लोगों को परमेश्वर से भेंट करने के लिये छावनी से निकाल ले गया; और वे पर्वत के नीचे खड़े हुए। 18और यहोवा जो आग में होकर सीनै पर्वत पर उतरा था, इस कारण समस्त पर्वत धूएँ से भर गया; और उसका धूआँ भट्टे का सा उठ रहा था, और समस्त पर्वत बहुत काँप रहा था। 19फिर जब नरसिंगे का शब्द बढ़ता और बहुत भारी होता गया, तब मूसा बोला, और परमेश्वर ने वाणी सुनाकर उसको उत्तर दिया। 20और यहोवा सीनै पर्वत की चोटी पर उतरा; और मूसा को पर्वत की चोटी पर बुलाया, और मूसा ऊपर चढ़ गया। 21तब यहोवा ने मूसा से कहा, "नीचे उतर के लोगों को चेतावनी दे, कहीं ऐसा न हो कि वे बाड़ा तोड़ के यहोवा के पास देखने को घुसें, और उनमें से बहुत से नष्ट हो जाएँ। 22और याजक जो यहोवा के समीप आया करते हैं वे भी अपने को पवित्र करें, कहीं ऐसा न हो कि यहोवा उन पर टूट पड़े।" 23मूसा ने यहोवा से कहा, "वे लोग सीनै पर्वत पर नहीं चढ़ सकते; तू ने तो आप हम को यह कहकर चिताया कि पर्वत के चारों ओर बाड़ा बाँधकर उसे पवित्र रखो।" 24यहोवा ने उस से कहा, "उतर तो जा, और हारून समेत तू ऊपर आ; परन्तु याजक और साधारण लोग यहोवा के पास बाड़ा तोड़ के न चढ़ आएँ, ऐसा न हो कि वह उन पर टूट पड़े।" 25अतः ये बातें मूसा ने लोगों के पास उतरके उनको सुनाईं।

आयतें 16-19. अध्याय 19 में अन्तिम अनुच्छेद, **तीसरे दिन**, परमेश्वर के दर्शन का अर्थात लोगों के सम्मुख परमेश्वर के दिखाई देने का वर्णन करता है। **पर्वत** पर परमेश्वर का उतरना भय के साथ प्रेरणादायक रहा होगा। शब्दों के ऊपर शब्दों को रखा गया; तीव्र घटनाक्रम में विभिन्न चित्र देखने को मिलते हैं, जो उसके दिखाई देने के प्रभाव को गहरा कर देते हैं। लेखक यह समझाने का प्रयास कर रहा था कि यह दृश्य जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, किस प्रकार का रहा होगा। परमेश्वर के दिखाई देने में निम्नलिखित तत्व शामिल हैं:

1. बादल गरजना और बिजली चमकना
2. पर्वत पर काली घटा का छाना
3. नरसिंगे का बड़ा भारी शब्द होना
4. पर्वत पर धूएँ का होना
5. आग में परमेश्वर का उतरना
6. आँ भट्टे का सा उठना
7. भूकम्प होना जिसमें समस्त पर्वत बहुत काँपना
8. नरसिंगे का शब्द बढ़ना और बहुत भारी होता जाना
9. परमेश्वर का मूसा को गर्जन की ध्वनि के साथ उत्तर देना।[13]

मन के भावों को हिला देने वाली इस अद्‌भुत घटना ने लोगों का ध्यान खींच लिया और उस एक जन पर ध्यान केन्द्रित कर दिया जिसके साथ वे वाचा में प्रवेश

कर रहे थे। परमेश्वर कोई मनुष्य अथवा देख न पाने वाली मूर्ति नहीं था परन्तु वह ऐसा **जन** है जिसने अपने सेवकों के रूप में **बादल की गर्जन** और **बिजली की चमक** का प्रयोग किया जिन्होंने पर्वत को कँपा दिया, और जो **बादल** और **आग** में दिखाई दिया! इस्राएलियों को चाहिए था कि वे सीख जाएँ कि वे अशुद्धता के साथ इस प्रकार के परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता नहीं कर सकते। परमेश्वर ने कहा कि लोगों के सामने दिखाई देने के पीछे उसकी मानसिकता यही थी कि जब वह मूसा से बात करे तब वे भी सुन सकें और वे "सदैव के लिए [मूसा] पर विश्वास करें" (19:9)। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये दृश्य और ध्वनियाँ इसलिए भी थीं कि लोग व्यवस्था का पालन करने के लिए प्रेरित किए जाएँ जो परमेश्वर शीघ्र मूसा के द्वारा देने जा रहा था।

जब लोगों ने बादल की गर्जन और बिजली की चमक देखी और सुनी, **नरसिंगे का शब्द** सुना और पर्वत पर परमेश्वर की उपस्थिति का संकेत देने वाला बादल देखा तो वे **डर गए**। फ़िर भी मूसा **लोगों को परमेश्वर से भेंट करने के लिये छावनी से निकाल ले गया और वे पर्वत के निकट खड़े हो गए**। तब परमेश्वर ने मूसा से बातें की: **तब मूसा बोला, और परमेश्वर ने वाणी सुनाकर उसको उत्तर दिया।**

आयतें 20-22. फिर, **यहोवा** ने **मूसा** को **पर्वत की चोटी** पर तीसरी बार **बुलाया**। उसने **मूसा** से कहा कि **लोगों को चेतावनी दे** कि कहीं ऐसा न हो कि वे बाड़ा तोड़ के यहोवा के पास देखने को घुसें, और उनमें से बहुत से नष्ट हो जाएँ। **याजक** अपने आप को **पवित्र करें** जैसा कि वे परमेश्वर के निकट आते हैं; अगर वे असफ़ल होते हैं तो ऐसा न हो कि **यहोवा उन पर टूट पड़े**। अन्य शब्दों में परमेश्वर उन्हें मार डालेगा।

"याजक" कौन थे? जैसा कि उस समय व्यवस्था नहीं दी गई थी इस कारण हारून का याजकीय पद आरम्भ नहीं किया गया था (देखें 28:1)। ऊपरी तौर पर ये याजक, व्यवस्था के द्वारा हारून की याजकीय सेवा के ठहराए जाने से पूर्व सेवा करने वाले लोग थे। सम्भावित रूप से वे जवान पुरुष थे, सम्भावित रूप से प्रत्येक परिवार में पहिलौठे थे जिन्हें परमेश्वर के लिए समर्पित किया गया था और जो लोगों के लिए बलिदान चढ़ाया करते थे (देखें 13:2; 24:5)।[14]

आयतें 23-25. ऊपरी तौर पर मूसा यह समझ नहीं पाया कि **परमेश्वर** ने इन निर्देशों को क्यों दोहराया; उसने कहा कि **लोगों को** यह पहले ही बता दिया गया कि वे पर्वत के निकट न आएँ। पहले से दिए गए निर्देशों के प्रकाश में मूसा का व्याकुल कर देने वाला प्रत्युत्तर समझा जा सकता है (19:12)।[15] फ़िर भी परमेश्वर ने मूसा से बलपूर्वक आग्रह किया की वह **उतर जाए और हारून** समेत **ऊपर आए**। कस्सुटो ने लिखा, "मूसा के कथन को तीखे स्वर के साथ नकार दिया गया: नीचे उतर जा - जो मैंने कहा है वैसा कर और मेरी आज्ञा के विषय में अधिक खोज-बीन मत कर।"[16] उसने यह अर्थ निकाला कि मूसा को यह चाहिए था कि वह लोगों को फ़िर से चेतावनी दे कि वे पर्वत के निकट न आएँ। तब **मूसा** ने वैसा ही किया जैसा करने के लिए परमेश्वर ने कहा।

परमेश्वर के साथ इस्राएल की भेंट का चित्र भव्य था। लोगों को व्यवस्था देने

के लिए प्रत्येक विवरण सही स्थान में था।

अनुप्रयोग

परमेश्वर का अपने लोगों के साथ सम्बन्ध (19:1-8)

निर्गमन 19:1-8 में रिकॉर्ड की गई घटना को छोड़ और कोई अन्य घटना पुराना नियम में इतनी महत्वपूर्ण नहीं लगती। इस पद में इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा, इस्राएल के साथ उसके सम्बन्ध की परिभाषा देती है और शेष पुराना नियम के लिए एक व्यवस्था उपलब्ध करवाती है। स्वयं में यह वाचा महत्वपूर्ण है साथ ही यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि पुराना नियम समय में इस्राएल के साथ परमेश्वर का सम्बन्ध, वर्तमान में उसके साथ हमारे सम्बन्ध के समानान्तर में बना रहता है (1 पतरस 2:9; गला. 3:29)। एक वाचा के द्वारा इस्राएली लोग परमेश्वर के लोग बन गए। हमारे पास भी एक वाचा है (इब्रा. 8:6, 8)। इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा को उसी प्रकार देखा जा सकता है जैसा कि वर्तमान में परमेश्वर की वाचा हमारे साथ है।

परमेश्वर के साथ इस्राएलियों का सम्बन्ध उसके अनुग्रहकारी कार्यों पर आधारित था ... और इसी प्रकार उसका सम्बन्ध हमारे साथ भी है। परमेश्वर ने जो किया उसी के साथ वाचा का आरम्भ होता है: "तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ" (19:4)। फ़िरौन इस्राएल को जाने की स्वीकृति दे दे इसके लिए उसने मिस्र पर महामारियाँ भेजी और इस्राएल को मिस्र से छुड़ाया। परमेश्वर ने तब समुद्र को खोला और बन्द कर दिया जिससे वह इस्राएल को बचा सके और फ़िरौन की सेना को नष्ट कर सके। उसने जंगल में इस्राएलियों को अगुवाई (13:21, 22), पानी (15:23-25; 17:2-6), भोजन (16:13-15), युद्ध में जीत (17:8-13), और संस्था (अध्याय 18) उपलब्ध करवाते हुए उनकी जरूरतों को पूरा किया। यह हमें स्मरण दिलाया गया है कि इस्राएल, परमेश्वर के छुटकारे अथवा आशिषों के अधिकारी नहीं थे (14:10-12; 15:22-24; 16:19, 20, 28; 17:1-4; व्यव. 7:6-8; 9:4-6)। इस्राएल के लिए परमेश्वर ने जो कुछ किया उसके बारे में सोचें और फ़िर पूछें, "इस्राएल ने परमेश्वर के लिए क्या किया? विशेष रूप से देखने पर इस्राएल ने ऐसा क्या किया कि वह छुड़ाए जाने का अधिकारी हो?" उन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं किया! वे कुड़कुड़ाए और उन्होंने शिकायतें की। वे अविश्वासयोग्य, कृतघ्न और अनाज्ञाकारी रहे थे। इस्राएल, उद्धार पाने का अधिकारी नहीं था।

इसी प्रकार समान रूप में परमेश्वर ने जो कुछ किया है इसके साथ ही परमेश्वर के साथ मसीही लोगों के सम्बन्ध का आरम्भ होता है (रोमियों 5:6-9; 2 तीमु. 1:9, 10; तितुस 3:5)। अनुग्रह के द्वारा हम बचाए गए हैं। इसका अर्थ यह है कि इस्राएल के समान हम भी उद्धार पाने के लिए योग्य नहीं थे।

परमेश्वर के साथ इस्राएलियों का सम्बन्ध परमेश्वर की शर्तें स्वीकार करने के प्रति इच्छा पर आधारित था ... और इसी प्रकार उसका सम्बन्ध हमारे साथ भी

है। इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा की शर्तों के बारे में विचार करें। परमेश्वर, इस्राएल से कुछ अपेक्षाएँ रखता था: और वे ये थीं कि वे उसकी सुनें और उसकी वाचा को बनाए रखें (19:5, 6)। परमेश्वर के प्रस्ताव को मानने या अस्वीकार करने का अधिकार इस्राएल के पास था परन्तु परमेश्वर के प्रति उस प्रस्ताव में परिवर्तन करने या उन शर्तों पर स्वयं का आदेश चलाने का अधिकार उनके पास नहीं था (19:8)।

हमारे लिए बहुत कुछ करने के बाद भी अपने साथ एक सम्बन्ध में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर, एक अवसर का प्रस्ताव रखता है। हम उसके लोग बन सकते हैं परन्तु हमारे पास एक चुनाव है। उसके लोग बनने के लिए हमें उसकी शर्तों को स्वीकार करना होगा। स्वयं की सुविधा के अनुसार हम उन शर्तों में परिवर्तन नहीं कर सकते, न ही परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्धों की शर्तों पर हम अपना आदेश चला सकते हैं अथवा जितना परमेश्वर प्रस्ताव रखता है उससे कम कर सकते हैं। जो कुछ करने की आज्ञा वह हमें देता है उसे करने के लिए हमें समर्पित हो जाना चाहिए। जब हम मसीही व्यक्ति बनते हैं तब हम एक वायदा करते हैं: "जो कुछ परमेश्वर ने कहा है वह हम करेंगे!" उस क्षण हमें उन सब बातों के विषय में मालूम नहीं होता कि इन सब बातों की अपेक्षा वह हमसे रखेगा। फ़िर भी जैसा इस्राएल ने किया वैसे ही हम भी एक असीमित समर्पण करते हैं और तुरन्त प्रभाव से यह कहते हैं, "परमेश्वर मुझे अब तक मालूम नहीं है कि मेरा समर्पण मुझसे पूरे समर्पण की माँग करेगा। फ़िर भी मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि जिस प्रकार मैंने अपने जीवन के लिए आपकी इच्छा के बारे में जाना वैसे ही मैं इसे पूरा करूँगा।"

परमेश्वर के साथ इस्राएलियों का सम्बन्ध उनके द्वारा वाचा को निरन्तर बनाए रखने के आधार पर था ... और इसी प्रकार उसका सम्बन्ध हमारे साथ भी है। जब तक इस्राएल वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहा तब तक वे परमेश्वर के विशेष लोग थे जो उसकी देख-भाल और सुरक्षा के अन्तर्गत थे। फ़िर भी जब लोगों ने परमेश्वर की नहीं सुनी या उसकी वाचा को नहीं माना तब उसने इस्राएल को उनके शत्रुओं के हाथों में सौंप दिया।

उनकी असफ़लता में विभिन्न पाप शामिल थे। (1) परमेश्वर ने उनके लिए जो कुछ किया था उसे वे भूल गए थे - कि किस प्रकार उसने उन्हें अनुग्रह के द्वारा बचाया। (2) वे निकटता से अविश्वासियों के साथ जुड़े हुए थे। वायदे के देश के निवासियों को वहाँ से निकालने के स्थान पर उन्होंने उनके साथ विवाह किया। (3) उन्होंने अपने विशेष अधिकारों को याद रखा पर अपनी ज़िम्मेदारियों को भूल गए। परमेश्वर के लोग होने में और उनके बीच परमेश्वर की उपस्थिति होने में उन्होंने अपने आप की बढ़ाई की परन्तु उन्होंने इस प्रकार जीवन बिताया मानो परमेश्वर का मन्दिर उनके बीच में हो और परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने के लिए उसने उन्हें दण्ड से मुक्त कर दिया हो (देखें यिर्म. 7)। वे यह भूल गए कि परमेश्वर के लोगों के रूप में जीवन जीने की महान ज़िम्मेदारी के साथ ही परमेश्वर के लोग होने का विशेष अधिकार प्राप्त होता है।

परमेश्वर के साथ मसीही सम्बन्ध भी इसी प्रकार वाचा के प्रति विश्वासयोग्य

होने की हमारी इच्छा पर आधारित है। प्रायः मसीही लोग अपनी प्रतिज्ञा के प्रति अविश्वासयोग्य रहते हैं। (1) परमेश्वर ने हमारे लिए जो किया है उसे हम भूल जाते हैं। (2) हम सांसारिक आचरण से संक्रमित हो जाते हैं। (3) कभी-कभी हम अपने विशेष अधिकारों को स्मरण रखते हैं परन्तु अपनी ज़िम्मेदारियों को भूल जाते हैं। हम "परमेश्वर के लोग" होने में बढ़ाई महसूस करते हैं परन्तु यह भूल जाते हैं कि यह स्तर ज़िम्मेदारियों के साथ चलता है। इनके साथ ही अन्य ज़िम्मेदारी यह है कि उस ज्योति को अन्य लोगों के साथ बाँटें और नाश होने वाली आत्माओं को बचाने का प्रयास करें (देखें 1 पतरस 2:9, 10)।

उपसंहार। परमेश्वर ने उसके अपने लोग होने का कैसा विशेष अधिकार हमें दिया है! यह विशेष अधिकार हमें उसकी आज्ञाओं के प्रति कृतज्ञता के साथ प्रत्युत्तर देने के लिए अगुवाई दे। सर्वप्रथम उसके बच्चे बनने के द्वारा हम ऐसा करते हैं। उसके लोगों के रूप में हमें उस समर्पण में जीने का प्रयास करना चाहिए जो हमने उसके साथ तब स्थापित किया जब हमने वाचा के एक सम्बन्ध में उसके साथ प्रवेश किया।

परमेश्वर के लोग (19:5, 6)

जिस प्रकार पुरानी वाचा के अन्तर्गत इस्राएल राष्ट्र के लोग परमेश्वर के लोग थे उसी प्रकार नई वाचा के अन्तर्गत कलीसिया के लोग परमेश्वर के लोग हैं। जो लोग कलीसिया में हैं उनके लिए इसका क्या अर्थ है? इस प्रश्न का उत्तर 1 पतरस 2:9 में देखने को मिलता है। (1) इस्राएल के समान हम लोग "एक चुनी हुई जाति" है। परमेश्वर के चुने हुए लोग, शारीरिक इस्राएल नहीं है परन्तु आत्मिक इस्राएल हैं। हम चुने हुए हैं क्योंकि हम परमेश्वर के उद्धार के वरदान को स्वीकार करने का चुनाव करते हैं। (2) इस्राएल के समान हम लोग "याजकों का एक पवित्र समाज" हैं। याजकों के एक राज्य के रूप में हम "आत्मिक बलिदान" चढ़ाते हैं (1 पतरस 2:5; देखें प्रका. 1:6; 5:9, 10)। (3) इस्राएल के समान हम लोग "एक पवित्र राष्ट्र" हैं। हमें उसी प्रकार "पवित्र बनना" है जिस प्रकार परमेश्वर पवित्र है (1 पतरस 1:15, 16)। (4) इस्राएल के समान हम लोग "परमेश्वर के निज धन के लोग" हैं। हम अद्‌भुत हैं जिन्हें मसीह के लहू के द्वारा खरीदा गया है। हमारे महान विशेष अधिकार महान ज़िम्मेदारियों के साथ आते हैं: हम इसलिए हैं कि अपने परमेश्वर की भव्यता की घोषणा करें, यहाँ तक कि जिस प्रकार इस्राएल के लिए यह आवश्यक था कि वह "अन्यजातियों के लिए ज्योति" का कारण रहें।

परमेश्वर की महाप्रतापी पवित्रता (19:10-19)

जब परमेश्वर पर्वत पर उतरा तब लोग उसके निकट नहीं आ पाए। हमें परमेश्वर तक पहुँच से दूरी की "महाप्रतापी ... पवित्रता को समझना चाहिए (15:11)। अनेक लोग उसे मित्र के समान एक दादाजी के रूप वाले एक व्यक्ति के समान देखते हैं जो कभी भी किसी को नुकसान नहीं पहुँचाएगा। हमें परमेश्वर को

प्रेमी परमेश्वर के रूप में देखना चाहिए; साथ ही हमें यह भी समझना है कि जो दिव्य जन सीनै पर्वत पर उतरा उसने यह प्रेरणा दी कि उसका डर लोगों में हो। "जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है" (इब्रा. 10:31)।

परमेश्वर ने बाड़ा बाँधा (19:12, 23)

जिस प्रकार परमेश्वर "बाड़ा बाँधता है" जिससे कि इस्राएली लोग पर्वत के बहुत निकट न आएँ उसी प्रकार वह अपने पवित्र वचन के चारों ओर एक बाड़ा बाँध कर रखता है। (व्यव. 4:2; 2 यूहन्ना 9; प्रका. 22:18, 19)।

दो पर्वत: सीनै और सिय्योन (19:16-19)

इब्रानियों 12 सीनै पर्वत और सिय्योन पर्वत के बीच अन्तर करती है। कलीसिया को "सिय्योन पर्वत" की धारणा में शामिल किया गया है। मसीही लोग किसी ऐसी चीज़ के पास नहीं लाए गए हैं जो लोगों को डरा दे परन्तु कुछ ऐसी चीज़ के पास लाए गए हैं जो बहुत ही उत्तम है:

> तुम तो उस पहाड़ के पास, जो छुआ जा सकता था, और आग से प्रज्वलित था, और काली घटा, और अंधेरा, और आँधी के पास, और तुरही की ध्वनि, और बोलनेवाले के ऐसे शब्द के पास नहीं आए, जिसके सुननेवालों ने विनती की कि अब हम से और बातें न की जाएँ। क्योंकि वे उस आज्ञा को न सह सके: "यदि कोई पशु भी पहाड़ को छुए तो उस पर पथराव किया जाए।" और वह दर्शन ऐसा डरावना था कि मूसा ने कहा, "मैं बहुत डरता और काँपता हूँ।" पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, के पास और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहलौठों की साधारण सभा और कलीसिया, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं, और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं, और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु और छिड़काव के उस लहू के पास आए हो, जो हाबिल के लहू से उत्तम बातें कहता है। (इब्रा. 12:18-24)।

समाप्ति नोट्स

[1]जॉन आई. डर्हम ने यह सुझाया कि "उसी दिन" पद का अर्थ है कि वह दिन जब वे पर्वत के निकट पहुँचे उसी मूसा परमेश्वर से भेंट करने के लिए पर्वत पर चढ़ गया। (जॉन आई. डर्हम, *एक्सोडस*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वोल. 3 [वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987], 261.) [2]जॉन जे. डेविस, *मोसिस एन्ड द गोड्स ऑफ़ इजिप्ट* (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971, 1986), 202, फ़्रान्सिस डी. निखोल, एड., *द सेवन्थ-डे एडवेन्टिस्ट बाइबल कमेन्ट्री* (वॉशिंग्टन, डी.सी.: रिव्यु एन्ड हेराल्ड पब्लिशिंग असोसिएशन, 1953), 593, एन्ड सी. एफ़. कैल एन्ड एफ़. डेलिटशैक, *द पेन्टाट्युक*, वोल. 2, ट्रान्स. जेम्स मार्टिन, बिब्लिकल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेन्ट (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. अड्र्समेन्स पब्लिशिंग कं., 1949), 89. जेम्स बर्टन कॉफमैन ने यह सिद्धान्त स्वीकार किया कि फ़सह से ठीक पचास दिन बाद व्यवस्था दी गई। (जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमेन्ट्री ऑन एक्सोडस, द सेकन्ड बुक ऑफ़ मोसिस* [अबिलीन, टेक्सस: एसीयू प्रेस,

1985], 259.) [3]अंबरटो कस्सुटो, *अ कमेन्ट्री ऑन द बुक ऑफ़ एक्सोडस*, ट्रान्स. इस्राएल एब्राहम्स (जरुसलेम: मैगनेस प्रेस, 1997), 224-29, से लिया गया है। [4]उपरोक्त, 229. [5]कस्सुटो ने अन्य पद के विषय में टिप्पणी की, "एक महत्वपूर्ण विषय के लिए तीन सन्दर्भ (आयतें 12-13; 21-22; 24) एक सामान्य साहित्यिक अभ्यास के साथ मेल बनाए रखता है" (उपरोक्त., 233)। [6]मूसा के युग में इस्राएल, परमेश्वर का चुना हुआ राष्ट्र था। फ़िर भी, नई वाचा के अन्तर्गत यहूदियों और अन्यजातियों के बीच अन्तर समाप्त कर दिया गया है (गला. 3:26-29; इफ़ि. 2:13-18)। अतः इस वर्तमान युग में शारीरिक रूप में यहूदी लोग (अथवा राष्ट्र के रूप में इस्राएल) संसार के अन्य लोगों में से अब परमेश्वर के चुने हुए लोग नहीं रहे. [7]इन *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 2, *जेनेसिस - नम्बर्स* (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 1990), 417 में वॉल्टर सी. कैसर, जूनियर, "एक्सोडस।" [8]कॉफमैन का यह मानना था कि इस्राएलियों ने पाप के कारण, सब विश्वासियों के , याजकीय विशेष अधिकार को खो दिया। (कॉफमैन, 259.) [9]आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इन्ट्रोडक्शन एन्ड कमेन्ट्री*, टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1973), 145. [10]डर्हम, 263.

[11]कैसर, 416. [12]डर्हम, 263. [13]इस प्रकार के प्रकटीकरण सम्पूर्ण बाइबल में परमेश्वर के दिखाई देने के सूचक हैं। [14]कैसर, 419. [15]मूसा का प्रत्युत्तर, जैसा कि अनेक आधुनिक टीकाकर बल देते हैं, इस बात का साक्ष्य नहीं है कि अध्याय 19 स्रोतों का एक संग्रह है जिन्हें संपादक ने एक साथ मिला दिया। (कस्सुटो, 235.) [16]उपरोक्त, 234.